13

बच्चे किस प्रकार सीखते हैं?
(प्रारंभिक अधिगम एवं शिक्षण)

पाठ्यचर्या उन समस्त सम्भव अनुभवों का योग है जिन्हें बच्चों को प्रारंभिक बाल्यावस्था केन्द्रों पर प्रदान किया जा सके। पिछले पाठ में हमने प्रत्येक बच्चे में अपनेपन की भावना के विकास हेतु बच्चों की सामाजिक परिस्थितियों को संज्ञान में लेने के महत्व पर चर्चा की थी। इस पाठ से आप बच्चों के स्वाभाविक रूप से सीखने के पैटर्नों और विविधाताओं के बारे में सीखेंगे। बच्चों की सहभागिता तथा अधिगम को प्रेरित करने के लिये बच्चों के साथ की जाने वाली अन्तर्क्रिया को आकर्षक होना चाहिए। यह सबसे प्रमुख बात है कि पाठ्यचर्या या विषयवस्तु को प्रारंभिक अधिगम परिस्थितियों में बच्चों के साथ किस प्रकार उपयोग में लाया जाये? विभिन्न आयामों में होने वाली वृद्धि की पारस्परिक निर्भरता को ध्यान में रखते हुए दिनभर में सभी आयामों के विकास को बढ़ावा देने वाले अनुभवों को शामिल करना चाहिए।

पूर्व प्राथमिक विद्यालयी पाठ्यचर्या में बच्चों के समग्र तथा एकीकृत विकास के लिये निर्मित तथा नियोजित पूर्व-प्राथमिक विद्यालयी अनुभवों की पूर्ण श्रृंखला और सीखने के अवसर शामिल हैं।

स्वतन्त्र संरचित शैली के रूप में ईसीसीई की पाठ्यचर्या में पूरे दिन की गतिविधियाँ; सभी आयामों जैसे कि संज्ञानात्मक, संवेगात्मक या सामाजिक मूल्यों आदि पर आवश्यक बल के साथ देखभाल करने की रणनीतियाँ; और विकासात्मक अनुभवों के रूप में अनियोजित घटनाओं को स्वीकार करने और उपयोग की समझ समाहित है।

यह पाठ 'बच्चे किस प्रकार सीखते हैं' के सम्बन्ध में समझ विकसित करने के बारे में है।

अधिगम प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- बच्चों की किस प्रकार से सीखने की अपनी अनोखी विधियाँ होती हैं, इसकी व्याख्या करते हैं;

टिप्पणी

- विभिन्न आयामों के लिये रणनीतियों और गतिविधियों के बारे में चर्चा करते हैं;
- अभिव्यक्तिकरण ओर सम्प्रेषण के माध्यम से कलाओं के महत्व का वर्णन करते हैं; और
- विकासात्मक बदलावों की पहचान कर सकते हैं और समुचित हस्तक्षेपों के बारे में सुझाव देते हैं।

13.1 बच्चों के विकास एवं अधिगम के सूचक

शिशु जन्म से सीखने के लिये तैयार होते हैं और उपयोग के द्वारा उनका मस्तिष्क विकसित होता है। वास्तव में मस्तिष्क के बारे में यह प्राय: कहा जाता है कि या तो इसका उपयोग करें या इसे नष्ट करें। आप मस्तिष्क को क्या और कैसे देते हैं, वह यह निर्धारित करता है कि बदले में आप क्या प्राप्त करते हैं। मानव शिशु की निर्भरता सबसे लम्बी अवधि की होती है जिस कारण यह अनिवार्य हो जाता है कि वातावरण संवेदी निवेशों की विस्तृत श्रृंखला से सम्पन्न हों। बच्चों की सर्वोत्तम क्षमता तक पहुँच हेतु हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम उनकी संवेदी योग्यताओं को उभारने के लिए पर्याप्त संवेदनशील अन्तर्क्रिया प्रदान कर रहे हैं। विकास के महत्वपूर्ण पड़ाव एक नवीन योग्यता या कौशल के उदय का वर्णन करते हैं। गर्दन पर नियन्त्रण, जमीन से सटकर चलना, रेंगना, खड़े होना, आवाजें करना, चेहरों के प्रति प्रतिक्रिया करना, ये सभी विभिन्न आयामों में विकास के सूचक हैं। जैसे-जैसे वे बढ़ते हैं, वे विभिन्न सम्बन्ध बनाते हैं। कोई भी दो बच्चे न तो एक जैसे तरीके से सीखते हैं और न ही एक जैसी गति से सीखते हैं। कुछ बच्चे जल्दी चलते हैं जबकि कुछ बच्चे जल्दी बात करते हैं। परिवर्तनों को देखकर जो कि प्रगति भी कहलाते हैं, हम कह सकते हैं कि अधिगम हो रहा है।

13.2 बच्चे किस प्रकार सीखते हैं

बच्चे विभिन्न तरीकों से सीखते हैं। कुछ देखकर सीखते हैं, कुछ बताये जाने पर सीखते हैं, कुछ सुनकर सीखते हैं और कुछ करके सीखते हैं। बच्चों को दूसरों के साथ खेलने के अवसर देना, अन्य लोगों के साथ आगे बढ़ने के लिये आवश्यक कौशलों के विकास का एक शानदार तरीका है। जैसे कि पूर्व पाठों में बताया गया है कि जन्म से लेकर छ: वर्ष की आयु का समय सीखने और अपने चारों ओर की दुनिया के अर्थ-निर्माण की स्वाभाविक इच्छा से भरा हुआ होता है। इस समय जबरदस्त सामाजिक, संवेगात्मक, शारीरिक तथा संज्ञानात्मक विकास की सम्भावना होती है और इससे पहले कि आप इसे जानें यह समय जा सकता है। बच्चों की उनके अपने परिवेश में रुचि तथा अधिगम में आनन्द को तीव्रता से बढ़ाने तथा बनाये रखने के लिये उच्च गुणवत्ता के उद्दीपित अनुभव और विविध प्रकार के अवसर प्रदान किया जाना आवश्यक और अनिवार्य है।

बच्चों के लिये प्रारंभिक अधिगम सर्वोत्तम ढंग से खेल, कहानी, वार्तालाप, गीत, लय, गति और अन्वेषण के अवसरों द्वारा होता है।

बच्चे वातावरण के साथ सक्रिय रूप से जुड़कर सबसे अच्छा सीखते हैं। प्रारंभिक वर्षों में इसमें शामिल हो सकता है :

विकास-योग्यता	अधिगम
वस्तुओं का अवलोकन, चेहरे देखना	रंग, आकार और ध्वनि के प्रति प्रतिक्रिया
आवाज और लय को सुनना	आवाज करना और गाना गाना
अन्वेषण	अनुभव द्वारा सीखना
परिवेश की वस्तुओं के साथ प्रयोग करना	जिज्ञासा तथा रूचि
प्रश्न पूछना जैसे कि क्यों?	समस्या समाधान
विभिन्न संरचनाओं या वस्तुओं के साथ प्रयोग करना	वर्गीकृत करना एवं
सुनना, नकल करना, दोहराना, अभ्यास	निर्माण कौशल
लय के अनुरूप गति, छोटी कहानियाँ दोहराना	स्मृति, प्रत्यास्मरण तथा तारतम्य

13.2.1 प्रगति के सूचक

प्रगति से हमारा तात्पर्य है कि बच्चों ने कौशल और दक्षतायें प्राप्त कर ली हैं। एक ईसीसीई केन्द्र में हम कैसे पता करेंगे कि बच्चे सीखने की स्थितियों में लाभान्वित हुए हैं? नियमित अवलोकन या व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक बच्चे का प्रतिदिन का रिकार्ड रखना इसके कुछ सामान्य तरीके हैं।

विकास के सभी आयामों का अवलोकन किया जाना जरूरी है। इसके लिये एक डायरी बनायी जा सकती है तथा रिकार्ड रखा जा सकता है जिससे माता-पिता को अपने बच्चे के अनूठे लक्षणों के बारे में सूचित किया जा सके। साथ ही साथ वे बच्चों के वर्तमान लक्षणों की आयु मानदण्डों (एक निश्चित आयु पर जो व्यवहार बच्चों द्वारा स्वाभाविक रूप से किये जाने की आशा की जाती है) के साथ तुलना कर सकें।

बच्चों की प्रगति के बारे में समझ का निर्माण तब होता है जब वे महत्वपूर्ण पड़ाव पार करते हैं जैसे कि सहायता के साथ खड़े होना और फिर चलना शुरू करना, सीढ़ी चढ़ना, कूदना, गेंद पकड़ना, वस्तुआं को खींचने और धक्का देने में सक्षम होना। बच्चे संज्ञानात्मक प्रगति तब होती है जब वे बैठने में सक्षम हो जाते हैं और कहानी सुनते हैं या पहेली को पूरा करने में लगे रहते हैं। सामाजिक प्रगति तब मानी जाती है जब बच्चे एक-साथ या व्यक्तिगत रूप से ब्लॉक्स के साथ खेल सकें या रंगने के दौरान अपने रंगों को साझा कर सकें या झूला झूलने में अपनी बारी का इंतजार करें। एक-दूसरे की देखभाल करना, कोई वस्तु साझा करना, अपनी बारी का इंतजार करना और एक-दूसरे के साथ मिलकर रहने का अधिगम मूलभूत वर्षों में महत्वपूर्ण है।

बच्चे सम्प्रेषण कौशल भी सीखते हैं, अपनी अर्थपूर्ण शब्दावली को समृद्ध करते हैं तथा कला, संगीत और नृत्य में भाग लेते हैं। वे प्रारंभिक संख्या-पठन और साक्षरता भी प्राप्त करते हैं जैसे कि समान ध्वनियों में रुचि प्रदर्शित करना, समान ध्वनियों में से आवाजों की पहचान करना और संख्याओं को दोहराना।

बच्चे का स्वतन्त्रतापूर्वक गति करना, प्रश्न पूछना, एक साथ खेलना, खोज करना, देखना, बैठना, कठपुतली का कार्यक्रम सुनना या देखना, झगड़े का समाधान करना, प्रायः गतिशील प्रारंभिक अधिगम विस्तार के सूचक होते हैं। प्रायः बच्चे कार्यों को पूरा करने में सीमितता या अयोग्यता का अनुभव कर सकते हैं ऐसे में उनकी सहायता की जा सकती है या उन्हें उनकी सीमाओं को समझाया जा सकता है।

अलग-अलग योग्यता वाले बच्चों को स्पष्ट संरचना और वास्तु जैसे कि रैम्प, श्रवण-यन्त्र और ध्वनियुक्त सहयोग द्वारा सहायता की जरूरत होती है। योग्यता पर ध्यान देने के अतिरिक्त बाधामुक्त और सहायक हस्तक्षेप, तदानुभूति तथा सह-अस्तित्व के प्रति जागरूकता और समानुभूति का निर्माण करते हैं।

विकास के अवसर ऐसे हों कि गतिविधियों में विविधता प्रदान करें क्योंकि विकास संगठित रूप में होता है और वृद्धि समग्र रूप में, साथ ही साथ ये आयामों की पारस्परिक निर्भरता पर निर्भर भी होते हैं। उदाहरण के लिए, एक बच्चा जो कि स्वस्थ नहीं है हो सकता है कि सामाजिक रूप से सक्रिय न हो जबकि सामाजिक रूप से अलग-थलग बच्चा समूह में सहभागिता खो सकता है।

13.3 विकास के आयाम अथवा सीखने के क्षेत्र

प्रारंभिक वर्षों में, सीखने तथा विकास के सिद्धान्त और प्रक्रियाएँ, विचारकों की अंतर्दृष्टि, अवलोकन और अनुसन्धानों के तथ्यों पर आधारित हैं। (राष्ट्रीय ईसीसीई पाठ्यक्रम रूपरेखा, 2013)।

मॉड्यूल संख्या–II में आपने पढ़ा है कि सभी आयामों में विकास तथा अधिगम होता है। एक आयाम में विकास अन्य आयामों के विकास को प्रभावित करता है। एक अकेला अनुभव कई आयामों को प्रभावित कर सकता है। किसी एक आयाम में विकसित प्रवृत्ति छोटे बच्चे के सीखने के अन्य क्षेत्रों को भी प्रभावित करती है।

बच्चे सोचते हैं, महसूस करते हैं और अन्य लोगों के साथ बातचीत करते हैं इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि उन्हें छूने के, महसूस करने के, निरीक्षण करने के, सुनने के और अभिव्यक्ति के अनुभव दिये जाने चाहिए। विकास के प्रारंभिक वर्ष महत्वपूर्ण हैं और मस्तिष्क का लचीलापन बच्चे की आयु तथा विकासात्मक आवश्यकताओं के अनुरूप एकीकृत एवं सम्पूर्ण विकास पर बल के साथ संवेदी निवेशों के द्वारा संवृद्धि को प्राप्त होता है।

आइए, एक संतुलित ईसीसीई पाठ्यचर्या की योजना बनाने से सम्बन्धित विकास के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में अध्ययन करते हैं।

13.3.1 शारीरिक-गत्यात्मक विकास

इसमें स्थूल गत्यात्मक कौशल, दक्षता के साथ सूक्ष्म मांसपेशियों का समन्वयीकरण, आँख और हाथ का समन्वयीकरण, संतुलन की समझ, शारीरिक समन्वयीकरण तथा स्थान और दिशा के बारे में जागरूकता, पोषण, स्वास्थ्य स्तर तथा अनुभव शामिल हैं।

टिप्पणी

13.3.2 भाषायी विकास तथा सम्प्रेषण

जन्म के समय से बच्चे आवाज करते हैं, सुनते हैं और मौखिक रूप से प्रतिक्रिया करते हैं। बच्चे भाषायी रूप से समृद्ध वातावरण में बोलना और समझना सीखते हैं। इस आयाम में सुनना, बोध, मौखिक कौशल, बोलना तथा संवाद, शब्द भंडार का विकास, प्रारंभिक साक्षरता कौशल या उभरती हुई साक्षरता कौशल जैसे ध्वन्यात्मक जागरूकता, मुद्रित जागरूकता तथा अवधारणाएँ, अक्षर-ध्वनि समानता, अक्षरों की पहचान, शब्द तथा वाक्य बनाना तथा प्रारंभिक लेखन तथा विद्यालय दिनचर्या के दौरान सम्पादन में प्रयुक्त भाषा का परिचय देना आदि शामिल है।

13.3.3 संज्ञानात्मक विकास

जिज्ञासा, सम्प्रत्ययों के ज्ञान के लिये प्रश्न पूछना, शब्दों का निर्माण करना, पूर्व संख्या तथा संख्या अवधारणाओं में संज्ञान के तत्व समाहित हैं। तुलना, वर्गीकरण, क्रमबद्धता, स्थान तथा परिमाण का संरक्षण, गिनती, एक-से-एक मिलान करना, स्थानिक समझ, नमूने तथा मापन का अनुमान से सम्बन्धित ज्ञान या कौशलों का विकास कार्य में संलग्नता तथा खेल के द्वारा होता है। अन्य कौशल भी संज्ञानात्मक वृद्धि से सम्बन्धित हैं जैसे कि आँकड़ों का प्रबन्धन, क्रमिक रूप से सोचने के कौशल, आलोचनात्मक सोच, अवलोकन, तर्कशक्ति एवं समस्या समाधान और भौतिक, सामाजिक तथा प्राकृतिक वातावरण से सम्बन्धित सम्प्रत्यय का ज्ञान। दृश्य, श्रवण तथा गतिसंवेदी अनुभवों पर आधारित पाँच ज्ञानेन्द्रियों के विकास पर आधारित संवेदी तथा प्रत्यक्षणात्मक विकास मानसिक कार्यों के लिये महत्वपूर्ण है।

13.3.4 सृजनात्मक तथा सौंदर्यबोध का विकास

यह विभिन्न कलात्मक क्रियाकलापों में सहभागिता, नृत्य, नाटक और संगीत की अभिव्यक्ति और सराहना से सम्बन्धित है।

13.3.5 व्यक्तिगत, सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास

इसमें आत्म-प्रत्यय, आत्म-नियंत्रण, जीवन कौशलों/स्वयं की मदद करने के कौशल, आदतों का निर्माण, पहल करना तथा जिज्ञासा, अनुबन्ध तथा दृढ़ता, सहयोग, सहानुभूति, सामाजिक सम्बन्ध समूह से अन्तर्क्रिया, सामाजिक व्यवहार, भावों की अभिव्यक्ति तथा दूसरों की भावनाओं को स्वीकार करने के विकास की बात करते हैं।

13.4 अधिगम के आयामों की परस्परिक निर्भरता

ईसीसीई पाठ्यचर्या के प्रभावी सम्पादन द्वारा प्रारंभिक वर्षों में अधिगम में वृद्धि होती है जो कि बच्चों के सम्पूर्ण विकास को प्रोत्साहित करता है। आयामों में विकास पृथक् रूप में नहीं होता अपितु संगठित ढंग से होता है। यह समझना जरूरी है कि किसी एक आयाम में कोई कमी अन्य आयामों को प्रभावित करती है। यदि बच्चे शारीरिक रूप से कमजोर हैं तो उनकी गतिशीलता में कम होती है या फिर वे निरुत्साही होते हैं जिस कारण वे किसी कार्य पर कम ध्यान दे पाते हैं या कार्य में ठीक से शामिल नहीं हो पाते और वे उपेक्षित हो सकते हैं इसलिए चिड़चिड़े बन जाते हैं। इन बच्चों को हस्तक्षेप और अतिरिक्त ध्यान की आवश्यकता होती है।

दूसरी ओर आयामों की पारस्परिक निर्भरता गतिविधियों के सम्पादन में देखी जानी चाहिए। कहानी कथन मुख्य रूप से एक भाषायी गतिविधि है हालाँकि यह कल्पनाशीलता और एक साथ सुनने के सामाजिक कौशलों को बढ़ाती है तथा विषयवस्तु से संवेगों की तुष्टि भी हो सकती है। बाह्य खेलों में बच्चे मुख्य रूप से शारीरिक और गत्यात्मक कौशलों के अभ्यास पर केन्द्रित हो सकते हैं लेकिन झूला झूलने में, अपनी बारी लेने में, खेल उपकरणों को साझा करने में तथा ऐसे अन्य क्षणों में ये सामाजिक कौशल भी सीखते हैं।

बच्चों के सम्पूर्ण विकास और उनकी विभिन्न आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रारंभिक अधिगम पाठ्यचर्या को व्यापक होना चाहिए।

13.4.1 सभी आयामों में अधिगम को सुनिश्चित करने वाले लक्षण

- बच्चों की आवश्यकताओं और योग्यताओं की पहचान हेतु निरीक्षण करना।
- बच्चों के साथ दायित्वपूर्ण सम्बन्ध विकसित करें क्योंकि कक्षा में होने वाला कार्य–सम्पादन अध्यापक और बच्चों के बीच पारस्परिक अधिगम की एक यात्रा है।
- चुनौतीपूर्ण गतिविधियों के साथ समग्र विकास को सुनिश्चित करें।
- बच्चे के सामाजिक परिवेश का सम्मान करें क्योंकि संवेगात्मक सुरक्षा कक्षाकक्ष में ध्यान पर प्रभाव डालती है।
- गतिविधियों के नियोजन तथा संचालन पर ध्यान दें। साथ ही साथ बच्चों की प्रतिक्रियाओं के अनुसार अन्तर्क्रिया की प्रक्रियाओं में संशोधन करें।
- बच्चों के साथ तथा बच्चों के बीच एक उर्वर तथा सकारात्मक सम्बन्ध बनाएं।
- ईसीसीई कक्षाकक्ष में दिव्यांग बच्चों का सामाजिक समावेशन सुनिश्चित करें।
- हस्तक्षेप तथा विनियमन के क्षेत्रों की पहचान करें।
- माता–पिता के साथ साझेदारी में कार्य करें क्योंकि वे मूल्यवान संसाधन (बच्चों के विषय में जानकारी प्राप्त करने हेतु) हैं।

पाठगत प्रश्न 13.1

I. नीचे दिए गए कथन सत्य हैं अथवा असत्य लिखिए–

(क) किसी एक आयाम में परिवर्तन या विकास अन्य आयाम के विकास को सुगम बनाता है या रूकावट पैदा करता है।

(ख) संज्ञानात्मक विकास के अन्तर्गत विभिन्न संप्रत्ययों का विकास आता है।

(ग) बाल विकास के सभी आयाम आपस में संबंधित नहीं हैं।

(घ) मुद्रित जागरूकता, संवेगात्मक विकास का भाग है।

II. संक्षेप में उत्तर दें–

(क) बच्चों की प्रगति को ज्ञात करने के तरीकों की सूची बनाइए।

13.5 अधिगम को प्रोत्साहन

प्रारंभिक वर्षों में विभिन्न आयामों में अधिगम, अन्तर्क्रिया हेतु उपयोग में लायी जाने वाली रणनीतियों की प्रकृति से प्रभावित होता है। रणनीतियों को अनिवार्य रूप से बाल-केन्द्रित उपागम पर आधारित होना चाहिए। अतः खेल और गतिविधि आधारित उपागम बच्चों की जरूरतों, रुचियों, योग्यताओं तथा सामाजिक सन्दर्भों को पूरा करता है। शिक्षण-अधिगम उपागम समावेशी होना चाहिए जिससे सभी बच्चे बिना किसी भेदभाव की भावना के अपनी सहभागिता भावनात्मक रूप से सुरक्षित अनुभव करें।

गतिविधि एक निश्चित सीखने के क्षेत्र/क्षेत्रों को लक्ष्य में रखते हुए एक पृथक अधिगम अनुभव न होते हुए, बच्चों के लिये शिक्षक द्वारा पहचाने गये अनुभवों की एक सुनियोजित श्रृंखला का एक भाग है।

एक गतिविधि करते समय बच्चे सक्रियता के साथ शारीरिक और संज्ञानात्मक रूप से व्यस्त रहते हैं। बच्चों के लिये एक गतिविधि का पर्याप्त चुनौतीपूर्ण होना जरूरी है जो उन्हें विभिन्न तरीकों से और अनेक परिस्थितियों में पहले से अर्जित कौशल और ज्ञान का अभ्यास और प्रयोग करने दे। बच्चों की भलाई के लिये आनन्ददायक गतिविधियाँ प्रदान करने का प्रयास मुख्य है। एकरूपता तथा निर्णयात्मक होना सीखने में बाधक है। खेल जिज्ञासा और खोज उद्दीपित करता है और शारीरिक नियन्त्रण पर स्वामित्व को बढ़ाता है, सृजनात्मकता और सामाजिक कौशलों को प्रोत्साहित करता है तथा संवेगात्मक सन्तुलन एवं भाषायी कौशल को विकसित करता है।

13.5.1 खेल तथा गतिविधि आधारित हस्तान्तरण रणनीतियाँ

खेल तथा गतिविधि आधारित रणनीतियाँ बच्चों को वास्तविक रूप में सीखने के अवसर प्रदान करती हैं। खेल की स्थितियाँ सीखने की प्रक्रिया में बच्चे को एक सक्रिय सहभागी बनने में सहायता करती हैं न कि निष्क्रिय प्राप्तकर्ता। इस प्रकार की पद्धति एक संतुलित, प्रक्रिया उन्मुख कार्यक्रम प्रदान करती है जो कि विकास के उद्देश्यों को पूरा करता है। यह बच्चों में सीखने की प्रक्रिया जैसे अवलोकन, प्रयोग, समस्या समाधान तथा सृजनात्मकता के विकास को पोषित करता है, इसके साथ-साथ उनके शारीरिक, भाषायी तथा सामाजिक विकास को भी बढ़ावा देता है।

13.5.2 सभी आयामों में सीखने के अवसर

सभी आयामों में सीखने के अवसर ऐसे माध्यमों द्वारा मिलते हैं जो कि अभिव्यक्ति और सहभागिता को बढ़ाते हैं। सामूहिक और व्यक्तिगत खेल गतिविधियाँ, अधिगम प्रक्रियाओं के प्रति बच्चों के झुकाव के बारे में तत्काल पृष्ठपोषण प्रदान करती हैं।

नीचे दिया गया विवरण खेल–आधारित गतिविधियों को समझने में आपकी सहायता करेगा।

सर्वांगीण विकास के लिए कुछ सामान्य गतिविधियाँ

– मुक्त एवं संरचित संवाद	– रेत के खेल
– कहानी कहना एवं कहानी बनाना	– पानी के खेल
– अभिनयीकरण	– कठपुतली के खेल
– कविताएँ तथा गीत	– घेरा/समूह और गतिविधियाँ
– संगीत तथा गति	– खेल सामग्री के साथ संरचित संज्ञानात्मक एवं भाषायी गतिविधियाँ
– पहेली, मोतियों एवं ब्लॉक आदि के साथ मुक्त आंतरिक खेल	– प्रकृति की सैर
– बाह्य खेल	– स्थानीय यात्राएँ/भ्रमण

पाठगत प्रश्न 13.2

खाली स्थान भरिए–

(क) ईसीसीई शिक्षण तथा शिक्षण रणनीतियाँ .... होनी आवश्यक है।

(ख) शिक्षण अधिगम पद्धति .... होनी चाहिए जिसमें सभी को सम्मिलित किया जा सके।

(ग) खेल .... तथा .... को उद्दीप्त करता है।

(घ) .... रणनीतियाँ बच्चे के सीखने के अनुभवों को वास्तविक रूप प्रदान करती हैं, जिससे सीखने की प्रक्रिया में बच्चा एक सक्रिय सहभागी बनता है।

13.6 विभिन्न आयामों/क्षेत्रों के लिए विकासोचित गतिविधियों का नियोजन

बच्चों को प्रतिदिन नियमित रूप से तारतम्यता के साथ अनुभव प्रदान करना संवेगात्मक सुरक्षा को बढ़ावा देता है। हालाँकि, बच्चों की अपनी अनोखी गति होती है, साथ ही वे थोड़ी देर के लिये ही ध्यान दे पाते हैं। देखभाल करने वालों को अपने कार्यों के सम्पादन में लचीला होना चाहिए तथा साथ ही साथ विशिष्ट बच्चों के लिये आवश्यकतानुसार संशोधन के लिये तैयार होना चाहिए।

13.6.1 स्वास्थ्य तथा शारीरिक देखभाल

बच्चे के सीखने में शारीरिक स्वास्थ्य तथा गत्यात्मक विकास बहुत ही महत्वपूर्ण है तथा इस

टिप्पणी

विकास की प्रक्रिया को बहुत-से कारक जैसे वंशानुक्रम, पोषण संबंधी अवस्था, सामान्य शारीरिक स्थिति के साथ-साथ गतिविधि तथा व्यायाम के अवसर प्रभावित करते हैं।

गतिविधियों में ईसीसीई केंद्र में प्रत्येक बच्चे को पूरक आहार दिया जाना शामिल हो जो घर के भोजन में पोषण संबंधी किसी भी कमी को पूरा करे। दूध, अंकुरित दालें, प्रोटीन बिस्कुट, हरी सब्जियों के साथ दलिया, इडली, फल, स्कूल के नाश्ते के लिए सुझाए जा सकते हैं। गानों, कविताओं और कहानियों के माध्यम से भोजन की अच्छी आदतों के विकास में बच्चों की सहायता करना स्वास्थ्य और पोषण के प्रति उनके झुकाव को बढ़ाता है।

स्वास्थ्य, रोगों की रोकथाम जैसे टीकाकरण पर भी निर्भर है जो कि रोगों की रोकने का कार्यक्रम है। अच्छा स्वास्थ्य सुनिश्चित करता है कि बच्चे स्वस्थ एवं सक्रिय रहें। झूलना, सरकना, जंगल जिम जैसे बाह्य खेलों में बच्चों की माँसपेशियों का उपयोग होता है। दौड़ना, कूदना, फुदकना, खींचना और धक्का देना खेलों के ऐसे क्षण हैं जो जटिल गत्यात्मक कौशलों के विकास में सहायता करते हैं। शारीरिक स्वास्थ्य एवं गत्यात्मक विकास की नियमित रूप से देखरेख किया जाना जरूरी है।

13.6.2 गत्यात्मक विकास

आपने पढ़ा है कि बच्चों के शारीरिक तथा गत्यात्मक विकास को प्रभावित करने वाले बहुत से कारक हैं। गत्यात्मक विकास, स्नायुविक और माँसपेशियों की परिपक्वता पर निर्भर करता है। बच्चा किसी भी कौशल को तब तक नहीं सीख सकता जब तक वह उस कौशल को सीखने के लिए तत्पर न हो। गत्यात्मक विकास एक निश्चित ढंग से होता है। गत्यात्मक विकास की दर में व्यक्तिगत भिन्नताएँ पाई जाती हैं। हालांकि क्रम वही रहता है, परंतु आयु विशेष, जिस पर भिन्न-भिन्न बच्चे भिन्न-भिन्न स्तरों पर पहुँचते हैं, एक बच्चे से दूसरे बच्चे मे भिन्न होती है जो उनके अनुभवों तथा अवसरों पर निर्भर करती है। मॉड्यूल संख्या II में आपने पढ़ा है कि गत्यात्मक कौशल के दो प्रकार हैं– **सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल** तथा **स्थूल गत्यात्मक कौशल।**

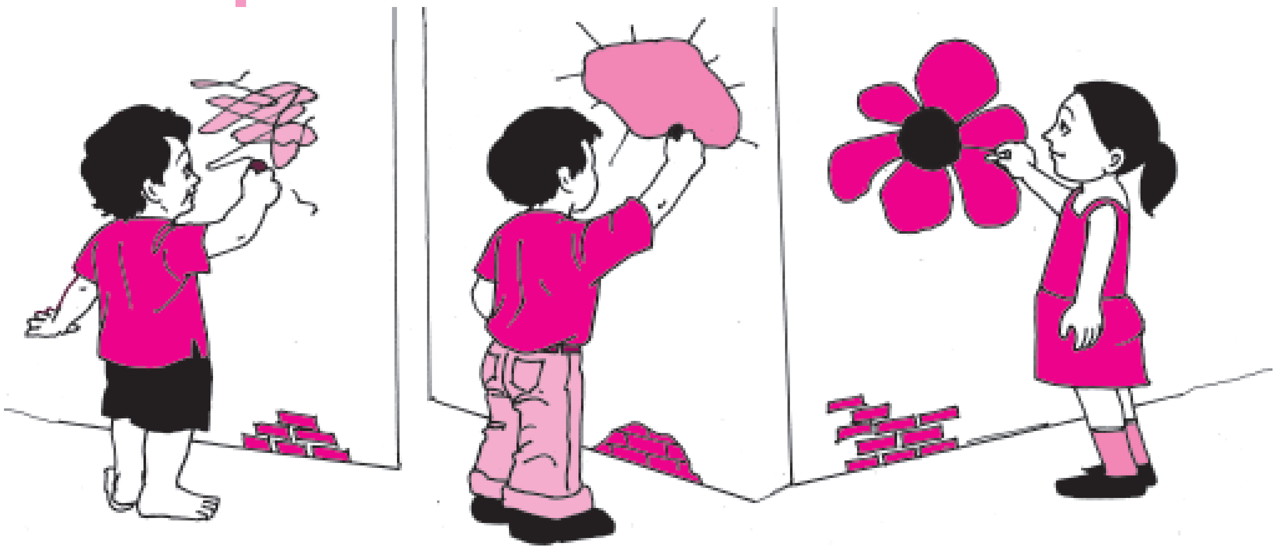

चित्र 13.1 (क) : सूक्ष्म गत्यात्मक विकास गतिविधियाँ

टिप्पणी

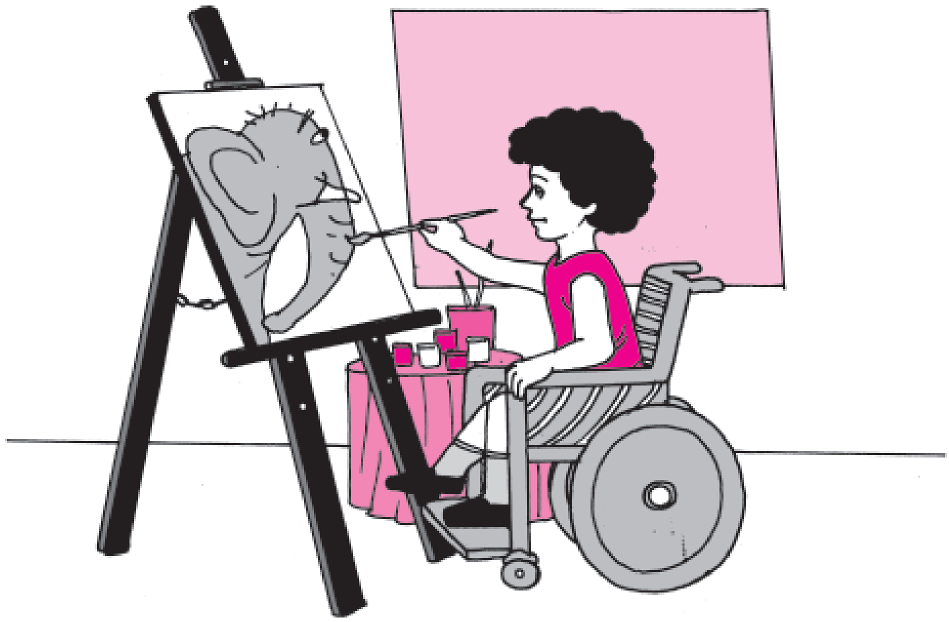

चित्र 13.1 (ख) : सूक्ष्म गत्यात्मक विकास गतिविधियाँ

स्थूल गत्यातमक कौशल के उदाहरण हैं चलना, संतुलन दौड़ना, कूदना, रेंगना, सरकना, लुढ़कना, झूलना, फुदकना, चढ़ना (ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर दोनों दिशाओं में), लयात्मक गति, गेंद से खेलना, फेंकना, पकड़ना तथा पैर से फुटबॉल को उछालना आदि। सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों में शामिल हैं, धागा पिरोना, फाड़ना, काटना, चिपकाना, ड्राइंग करना, रंग भरना, पेंटिंग करना, छपाई, पेपर मोड़ना, क्ले से काम करना, छाँटना, पैटर्न बनना, जोड़-तोड़ वाली सामग्री का उपयोग, उड़ेलना, आदि। सूक्ष्म माँसपेशियों के समन्वय की गतिविधियाँ, आँखों, हाथों और अंगुलियों की मांसपेशियों के नियन्त्रण के साथ-साथ आँखों और हाथों की गति के समन्वय से सम्बन्धित हैं। यह गतिविधि याँ स्वयं खाना खाने, स्वयं कपड़े पहनने जैसे स्व-सहायता कौशलों के विकास को बढ़ाती हैं। प्रारंभिक लेखन, ड्राइंग, पेंटिग, क्ले मॉडलिंग तथा जोड़तोड़ वाली सामग्री के साथ खेलना आदि गतिविधियाँ, आँखों और हाथों के समन्वय को विकसित तथा दृढ़ करती हैं।

चित्र 13.2 : स्थूल गत्यात्मक विकास गतिविधियाँ

टिप्पणी

13.6.3 भाषायी विकास

प्रारंभिक बाल्यावस्था में भाषा सीखना बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बाद के सीखने को आधार प्रदान करता है। बच्चे अपने आस-पास के लोगों की नकल के द्वारा, दूसरों से प्रोत्साहित होकर तथा सुनने एवं विचारों, सोच तथा भावनाओं की अभिव्यक्ति के अवसरों द्वारा भाषा सीखते हैं। बच्चों में भाषा सीखने की गुणवत्ता तथा स्तर अलग-अलग होते हैं। कुछ बच्चे जल्दी बोलना शुरू कर देते हैं कुछ देर से। कुछ बच्चे बहुत बोलते हैं जबकि कुछ शान्त होते हैं। कुछ हद तक यह आनुवांशिक होता है पर ज्यादातर जैसा वातावरण बच्चे को मिलता है उसका प्रभाव बच्चे पर नजर आता है। जब तक बच्चे प्री-स्कूल में आते हैं, वे घर पर पहले ही भाषा का प्रयोग कर रहे होते हैं।

उपयुक्त अनुभव तथा वातावरण से बच्चों के शब्द भंडार में निरंतर तथा तेजी से वृद्धि होती है। शिक्षित माता-पिता, उनके चारों ओर खिलौने, चित्र, कहानी की किताबें, अखबार तथा विविध प्रकार की वस्तुएँ, गुणवत्तापूर्ण सुनने के अवसर, संवाद, कहानियाँ, कविताएँ, गाने आदि, वयस्कों तथा अन्य बच्चों के साथ बोलने तथा अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के अवसर, खेलने के अवसर, टेलिविजन, रेडियो, कठपुतली के शो, भ्रमण तथा सैर उनके अनुभवों को बढ़ाते हैं।

वंचित परिवारों के बच्चे या जहाँ माता-पिता को बच्चों के साथ अंत:क्रिया करने का पर्याप्त समय नहीं मिलता है, वहाँ बच्चे इस प्रकार के अनुभवों का लाभ नहीं उठा पाते। इस प्रकार के अभाव की पूर्ति काफी सीमा तक एक अर्थपूर्ण प्रीस्कूल कार्यक्रम के द्वारा की जा सकती है। जहाँ तक संभव हो सके बातचीत का माध्यम प्रारंभिक बाल्यावस्था में बच्चे की घरेलू भाषा ही होनी चाहिए।

भाषा तथा प्रारंभिक साक्षरता गतिविधियों के क्रियान्वयन के लिए ध्यान देने की आवश्यकता वाले प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं–

- श्रवण कौशलों का विकास (ध्वनि विभेदीकरण, सुनने की अवधि, श्रवण बोध)।
- शारीरिक अंगों, घर तथा वातावरण (प्राकृतिक तथा सामाजिक वातावरण) से सम्बन्धित शब्द भंडार का विकास।
- बोलने के कौशलों तथा मौखिक अभिव्यक्ति का विकास (वार्तालाप, कहानी कहना, अभिनयकरण, कठपुतली के खेल, चित्र पठन, सृजनात्मक स्व-अभिव्यक्ति का विकास)।
- पढ़ने सम्बन्धी तत्परता का विकास (श्रवण सम्बन्धी/ध्वनि विभेदीकरण, दृष्टि विभेदीकरण, श्रवण-दृष्टि संबंध, बायें से दायें दिशात्मकता)।
- लेखन सम्बन्धी तत्परता का विकास (सूक्ष्म माँसपेशियों का विकास, आँखों तथा हाथों का समन्वय, अक्षर-बोध)।

बच्चे कहानी सुनने और सुनाने, परियोजना थीम पर बातचीत, कहानी के पुन:स्मरण, सामान्य पहेलियों, सामूहिक खेल, संकेतों को सुनने और एक विचार को पूरा करने जैसी गतिविधियों

टिप्पणी

द्वारा भाषा और साक्षरता में सुधार करते हैं। चित्र-पठन के सामान्य कार्य, सामान्य निर्देशों के पालन में बच्चों की सहायता, अलग या भिन्न को छाँटना शब्दावली के पुन:स्मरण और अभिव्यंजक शब्दावली के लिये अच्छे हैं।

निष्पादन हेतु गतिविधियाँ : क्रियाओं के साथ कविता पाठ, अभिनयकरण, रोल प्ले, कठपुतली के खेल, मौखिक अभिव्यक्ति, प्रकृति भ्रमण, घर, शारीरिक अंगों, फलों, सब्जियों से सम्बन्धित शब्द भंडार का उपयोग करते हुए वाक्य रचना आदि सुनने, अभिव्यक्ति करने एवं बोलने के कौशलों को विकसित करने के लिये जरूरी हैं। यह गतिविधियाँ 3-6 वर्ष के बच्चों के साथ तथा 6-8 वर्ष की आयु के बच्चों के साथ भी की जा सकती हैं। बड़े बच्चों के लिए कहानी या निर्देशों की जटिलता को बढ़ाया जा सकता है। बच्चे जब सुबह आते हैं या जब वे घर जाते हैं तब मुक्त संवाद विचारों को अभिव्यक्त करने और साझा करने में सहायक होता है। बहुत अधिक सुधार के बिना बच्चों को बोलने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिए। अगर बच्चा गलत वाक्य बोलता है उसे तुरंत रोकना नहीं चाहिए। बाद में बच्चे के वाक्य को दोहराना या पुनर्रचना करनी चाहिए जिससे बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ता है। ईसीसीई कार्यक्रम में दैनिक कार्यक्रम के रूप में कहानी कथन सम्प्रेषण में सहायता करना है। कहानियाँ छोटी, आयु के अनुरूप, रोचक तथा चेहरे के हावभाव तथा अवाज के उतार-चढ़ाव के साथ सुनानी चाहिए।

पढ़ने और लिखने सम्बन्धी तत्परता का विकास : तत्परता वह अवस्था है जब बच्चे बिना किसी संज्ञानात्मक या संवेगात्मक दबाव के सीखने के लिए परिपक्व एवं तैयार होते हैं। पढ़ने और लिखने सम्बन्धी तत्परता, पढ़ने ओर लिखने के निर्देशो से लाभ उठाने की बच्चे की योग्यता की ओर संकेत करती है। 3 साल तथा इससे बड़े बच्चों के लिए दृश्य एवं विभेदीकरण की गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। पढ़ने और लिखने सम्बन्धी तत्परता की विशिष्ट गतिविधियों पर और अधिक बल देने की आवश्यकता होती है जब बच्चे 4½ से 5 वर्ष के होते हैं, और इन गतिविधियों को करने के लिए तैयार होते हैं। वातावरण में उपस्थित विभिन्न ध्वनियों को पहचानना, वातावरण में उपस्थित विभिन्न ध्वनियों में भेद करना, शुरू की ध्वनि को पहचानना, तुकबंदी शब्द, अंताक्षरी, मिलान, भिन्न को पहचानना, अंतर को छांटना, वस्तुओ का और वस्तुओं के चित्रों को ध्वनि के आधार पर वर्गीकरण करना, मौखिक शब्दों से चित्रों का मिलान करना आदि जैसी गतिविधियाँ पढ़ने तथा लिखने संबंधी तत्परता के विकास में सहायक होती हैं। 5-6 वर्ष के बच्चे सामान्यत: प्राथमिक स्कूल की पहली कक्षा में होते हैं। यदि वे ईसीसीई केन्द्र में हैं तो उन्हें वर्णमाला के अक्षरों, तथा छोटे शब्दों का परिचय दिया जा सकता है। पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में बच्चे वर्णमाला के अक्षरों से ध्वनि का मिलान कर सकते हैं, किसी भी वस्तु के नाम के पहले अक्षर का वस्तु के चित्रों से मिलान कर सकते हैं तथा चित्रों का शब्दों से मिलान कर सकते हैं।

लिखने संबंधी तत्परता हेतु सूक्ष्म माँसपेशियों का विकास, आँख-हाथ का समन्वय, लेखन-सामग्री के नियन्त्रण तथा अक्षरों को पहचानने की गतिविधियाँ आवश्यक हैं। जब बच्चे विकासात्मक अवस्था में हों और उनके अंगुलियों तथा आँखों की मांसपेशियों को मजबूती एवं समन्वय की आवश्यकता हो तब उन्हें औपचारिक रूप से लिखना सिखाना उचित नहीं होगा।

13.6.4 संज्ञानात्मक विकास

चित्र 13.3 : संज्ञानात्मक विकास गतिविधियाँ

संज्ञान अपने आस-पास के परिवेश को जानने तथा समझने की प्रक्रिया की ओर संकेत करता है। संज्ञानात्मक विकास आधारभूत कौशलों अवलोकन, वर्गीकरण, क्रमबद्ध चिन्तन, समस्या समाधान तथा तर्कशक्ति का विकास है, जो हमें वातावरण/परिवेश को समझने में मदद करते हैं। वयस्कों द्वारा संवाद, क्रियाओं और निर्देशों द्वारा मध्यस्थता प्रदान करने से बच्चे जिज्ञासु बनते हैं और उनमें अन्वेषण और प्रयोग की इच्छा होती है। बच्चों की चिन्तन प्रक्रिया में आयु के साथ-साथ विकास होता है। बच्चे जब 3-6 वर्ष की आयु में संज्ञानात्मक विकास की पूर्व संक्रियात्मक अवस्था में होते हैं। वे अपने सीमित दृष्टिकोण से चिन्तन करते हैं और धीरे-धीरे तार्किक तथा अमूर्त चिन्तन में समर्थ हो पाते हैं। वे मूर्त तथा प्रत्यक्ष अनुभवों के द्वारा सीखते हैं। उनके अधिगम में तर्कशक्ति और समस्या समाधान की योग्यता को बढ़ाने में खेल तथा गतिविधियाँ मुख्य बिन्दु हैं।

संज्ञानात्मक विकास में ध्यान देने योग्य मुख्य क्षेत्र हैं:

संवेदी तथा बोधात्मक विकास : बच्चे अपनी ज्ञानेंद्रियों से सीखते हैं। ज्ञानेंद्रियों का प्रयोग जानने और समझने की प्रक्रिया का आधार है। ज्ञानेंद्रियाँ ज्ञान का द्वार हैं। जितने अधिक विविध और व्यापक संवेदक ये अनुभव होंगे, उतने ही बच्चे की संसार के बारे में समझ व्यापक होगी। किसी भी प्रकार के संवेदी अनुभव को सीमित करने या उसे वंचित रखने से किसी प्रत्यय के बारे में अधूरी या गलत समझ विकसित हो सकती है। अत: प्रारंभिक बाल्यावस्था में बहुत सी गतिविधियों एवं अवसरों द्वारा सभी आयु के बच्चों की पाँचों इंद्रियों के विकास (देखना, सुनना, स्पर्श करना, सूंघना तथा स्वाद) पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

संज्ञानात्मक कौशलों का विकास : इसमें स्मृति और अवलोकन, वर्गीकरण, क्रमबद्ध चिन्तन, समस्या समाधान और तर्कशक्ति शामिल है। शिक्षक को चाहिए कि वह इन सभी संज्ञानात्मक कौशलों के विकास के लिए अनुभवों एवं क्रियाकलापों को तैयार करे।

आधारभूत अवधारणाओं का निर्माण : अवधारणा वस्तुओं, लोगों, स्थानों तथा घटनाओं की एक मानसिक संरचना या चित्रण है। उदाहरण के लिए, अगर बच्चे ने रंग की अवधारणा को सीख लिया है तो वह वातावरण में उपस्थित वस्तुओं को रंग के आधार पर वर्गीकृत करने के योग्य हो जाएगा। बच्चों में आधारभूत अवधारणा का विकास या निर्माण उनके वातावरण को

टिप्पणी

समझने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। अगर बच्चों में अवधारणा की स्पष्ट जानकारी है तो वे अपने वातावरण में विभिन्न वस्तुओं का अवलोकन, विभेदन, वर्गीकरण करने तथा प्रत्यक्षण आधारित विचार से तर्क आधारित विचार की ओर प्रगति करने में समर्थ हो जायेंगे। किसी भी अवधारणा के विकास के लिए गतिविधियों का क्रमबद्ध रूप में आयोजन किया जाता है जैसे 'मिलान' (बच्चे अवबोधन स्तर पर मिलान करेंगे), 'पहचान' (उदाहरण–लाल क्या है? बच्चा अपने निष्क्रिय शब्द भंडार में संप्रत्यय को शामिल करता है) 'नाम देना' (उदाहरण कौन सा रंग है?) बच्चा सम्प्रत्यय को अपने सक्रिय शब्द भंडार में शामिल करता है।

आइए पूर्व–संख्या अवधारणाओं के उदाहरण देखें:

संख्या पूर्व अवधारणा : यह अपेक्षा की जाती है कि बच्चा संख्या ज्ञान से पूर्व निम्नलिखित संख्या पूर्व अवधारणाओं में दक्षता हासिल कर ले।

बड़ा, छोटा, समान रूप से (आकार में), लम्बा, छोटा, समान रूप से (लम्बाई में), भारी, हल्का, समान रूप से (वजन में), ऊँचा, छोटा, समान रूप से (ऊँचाई में), मोटा/गाढ़ा, पतला, समान रूप से (घनत्व में), चौड़ा, सँकरा, समान रूप से (चौड़ाई में), ज्यादा, कम, समान रूप से (द्रव्यमान/मात्रा अवधारणा), दूर, पास समान रूप से (दूरी में)। यह बच्चों में जटिल गणितीय सिद्धान्तों को समझने से पहले संख्या के मान के सही आकलन को समझने में मदद करता है। अगर बच्चों को संख्या पूर्व अवधारणाओं को सीखने से पहले उन पर गणित को जबरदस्ती थोप दिया जाए तो वे केवल इसे याद करेंगे और जब उन्हें तर्कशक्ति के और अधिक उच्च स्तर पर अपने ज्ञान को इस्तेमाल करना होगा तब वे परेशान होकर इससे भागने की कोशिश करेंगे।

संख्या अवधारणा से पूर्व अध्यापक के लिये बहुत सी संख्या तत्परता गतिविधियाँ प्रदान किया जाना आवश्यक है **जिनमें संख्या पूर्व गतिविधियों के बाद के सभी संज्ञानात्मक कौशलों की गतिविधियाँ शामिल हों।**

संख्या संप्रत्यय (अवधारणा) – संख्या एक अमूर्त अवधारणा है जो हमारे दिमाग में गिनने के बाद आता है। निरपेक्ष मानों, संख्या के चिह्न, संख्याओं को गिनना तथा क्रम में लगाने के पदों में संख्या की अवधारणा का विकास, आदि पाठ्यचर्या के अंश होने चाहिए। ईसीसीई कार्यक्रम का आधारभूत तथा दीर्घावधि उद्देश्य छोटे बच्चों के गणित के क्षेत्र में खोज के रास्ते खोलना है। बच्चे संख्या को पहचानते हैं क्योंकि उन्होंने इन्हें टेलीफोन, पते, स्पीडोमीटर, पृष्ठ संख्या, अखबार, कैलेंडर आदि पर देखा होता है परंतु उन्हें गणितीय संक्रियाओं का कोई अनुभव नहीं होता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था में अधिगम शिक्षात्मक या उपदेशात्मक संप्रेषण के बजाय खेल द्वारा संभव होता है। अत: संख्याओं के क्रम को रटने के स्थान पर बच्चों को उन्हें छोटे–छोटे समूहों के सन्दर्भ में, शाब्दिक खेलों एवं गिनती तथा मात्रा, गिनती तथा मात्रा के बीच के संबंध को सीखने एवं समझने की आवश्यकता होती है। संख्या तथा शाब्दिक खेल, आदि। एक पहलू के आधार पर एक समय में साधारण तुलना, वर्गीकरण तथा आकारों एवं सममितियों को पहचानना, इस अवस्था में अर्जित किये जाने योग्य उपयुक्त कौशल हैं।

वातावरणीय अवधारणाओं का विकास : बच्चे अपने वातावरण से सीखते हैं। बच्चे के आस-पास का वातावरण को निम्नलिखित ढंग से वर्गीकृत किया जा सकता है:

- प्राकृतिक वातावरण (जानवर, पक्षी, कीट-पतंगे, सब्जियों और फल, पौधे, आदि)
- भौतिक वातावरण (पानी, हवा, आसमान, धरती, ऋतुएं, मौसम)
- सामाजिक वातावरण (स्वयं और उसका परिवार, यातायात, समुदाय के सहायक, त्योहार)

वातावरण की इन अवधारणाओं को परियोजना की तरह लिया जा सकता है तथा बच्चों के लिए संचालित की जाने वाली गतिविधियों हेतु किसी विषयवस्तु का एक भाग बनाया जा सकता है। जैसा कि पहले भी अवधारणाओं पर चर्चा की जा चुकी है उदाहरणत: रंग, संख्या, आकार, समय, तापमान आदि से बच्चों को इन थीमों के द्वारा पूर्व में की गई अवधारणाएँ उदाहरणत: रंग, संख्या, आकार, समय, तापमान इत्यादि का भी परिचय कराया जा सकता है।

13.6.5 व्यक्तिगत, सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास

यह बच्चे की उन विशेषताओं तथा व्यवहारों के विकास की ओर संकेत करता है जो उसे सामाजिक वातावरण में समायोजन करने में मदद करते हैं। संवेगात्मक विकास, सामाजिक विकास को आधार प्रदान करता है। बच्चे का परिवार, विशेषत: माता-पिता सामाजीकरण के मुख्य कारक होते हैं। अन्य कारक जिनमें सहपाठी, शिक्षक, आस-पड़ोस यहाँ तक कि मीडिया (जनसंचार) भी सम्मिलित है, सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। जब बच्चे प्री-स्कूल में आते हैं तब वे सामान्यत: आत्मकेंद्रित होते हैं और वे चीजों को केवल अपने नज़रिये से देखते और महसूस करते हैं। उन्हें व्यक्तिगत खेलों और अकेले खेले जाने वाले खेलों का समानान्तर खेलों अर्थात् ऐसा खेल जिसमें दूसरी ओर अन्य बच्चा भी उसी खेल को खेल रहे होते हैं। वे एकल अन्तर्क्रिया जो कि माता-पिता द्वारा दी जाती है, के आदी होते हैं और अभी भी सामाजिक व्यवहार जैसे सहयोग, साझा करना, दूसरे की मदद करना, के योग्य नहीं होते हैं।

ईसीसीई केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य बच्चों के आत्मकेंद्रित व्यवहार को समाज-केंद्रित की ओर अग्रसर करना है, जैसे दूसरों के साथ खेलना, दूसरों की मदद करना, सामाजिक होना, आदि। यह आवश्यक है कि ईसीसीई केंद्र एक विश्वसनीय तथा सुरक्षित परिवेश प्रदान करें ताकि बच्चे केंद्र की गतिविधियों के साथ समायोजन करें, अच्छी आदतों का विकास करें, व्यक्तिगत स्वच्छता एवं साफ-सफाई बनायें रखें, उचित प्रकार से खाने की आदतें विकसित करें, सही से शौचालय का प्रयोग करें, खाना खाने के पहले तथा बाद में हाथों को धोयें, खेलने के बाद वस्तुओं को अपनी जगह पर रखें तथा वातावरण को साफ रखें।

इसमें सकारात्मक आत्म-प्रत्यय, सामाजिक व्यवहार जैसे साझा करना, दूसरों से सहयोग करना, दूसरों के अधिकारों तथा संपत्ति का (चीजों का) आदर करना, अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, स्वतंत्रता तथा नेतृत्व, शिक्षक तथा अन्य बड़े लोगों के साथ सहयोग करना शामिल है।

अत: बच्चों की मुख्य आवश्यकता, जिस पर ईसीसीई केंद्र ध्यान दे, सुरक्षा तथा स्वीकार्यता है। जब बच्चे ईसीसीई केंद्र में आते हैं तब वह पहली बार अपना घर छोड़ते हैं तथा उनका एक नए वातावरण में समायोजन करना एक बहुत बड़ी चुनौती होती है। ईसीसीई केंद्र/प्री-स्कूल

विद्यालय में इस प्रकार का वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए जो बच्चों को इस समायोजन में सहायता करें। बच्चों के व्यवहार, विशेषताओं तथा योग्यताओं में व्यापक रूप से व्यक्तिगत भिन्नताएँ देखी जाती हैं। प्रत्येक बच्चे का अपना अनोखा व्यक्तित्व होता है। संवेगात्मक विकास, सामाजिक विकास को आधार प्रदान करता है। बच्चों को अपने संवेगों की अभिव्यक्ति हेतु सृजनात्मक अभिनय, रोल प्ले, संगीत तथा गति एवं सृजनात्मक गतिविधियों द्वारा अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

बच्चों में अकसर व्यवहार संबंधी विकार देखे जाते हैं जैसे असामान्य रूप से आक्रामक व्यवहार, विमुखता और असामान्य रूप से शर्मीला व्यवहार, अनावश्यक चिन्ता, अति सक्रियता, प्रतिगामी (शैशवाकालीन व्यवहार में वापिस आना जैसे बिस्तर गीला करना, नाखून चबाना आदि)। माता-पिता तथा शिक्षक द्वारा समस्या की समझ तथा आश्वासनपूर्ण रवैया बच्चे को अपने डर तथा चिन्ता पर काबू पाने में सहायता करता है तथा अपने इस व्यवहारत्मक विकारों को दूर करने के योग्य बनाता है। दंड बच्चों में चिन्ता तथा अपमान का कारण बनता है। अतः बच्चों को दंडित नहीं किया जाना चाहिए।

प्रारंभिक बाल्यावस्था के दौरान ही बच्चों के बीच लिंग के सम्प्रत्यय का विकास होता है। इस अवस्था में ही लिंग के अनुरूप कार्य करने से सम्बन्धित रूढ़ियाँ बनती हैं। अध्यापकों तथा माता-पिता समेत अन्य वयस्कों को बालक तथा बालिकाओं से अपेक्षित व्यवहार में किसी भी अन्तर को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए। उन्हें सभी बच्चों से समान व्यवहार करना चाहिए और कोई पक्षपात नहीं करना चाहिए। यह सब सुचारु ढंग से हो इसके लिये अध्यापक को कक्षा के प्रत्येक बच्चे के माता-पिता से नियमित रूप से सम्पर्क बनाये रखकर बच्चे के घरेलू वातावरण से परिचित होना आवश्यक है। यह शिक्षकों, माता-पिता तथा अन्य संरक्षकों के बीच गुणात्मक सहभागिता का उदाहरण है।

13.6.6 कला और सौन्दर्यशास्त्र

सभी बच्चे सृजनात्मक होते हैं परंतु सृजनात्मकता का स्तर सभी में अलग-अलग हो सकता है। सृजनात्मकता कभी भी शून्य में जन्म नहीं लेती। बच्चों के पास जितने अधिक ज्ञान तथा अनुभव होंगे उतना ही सृजनात्मकता को आधार प्रदान करेंगे। उत्प्रेरक तथा प्रोत्साहित करने वाला वातावरण बच्चे में सृजनात्मकता को बढ़ावा देता है। मुक्त खेल, अभिनयकरण, रचनात्मक खेल के अवसर तथा सुविधाएँ बच्चों में सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करते हैं। घर या ईसीसीई केंद्र का आधिकारिक तथा सख्त परिवेश बच्चों में सृजनात्मकता के विकास में रूकावट उत्पन्न करता है।

सृजनात्मकता तथा सौंदर्यात्मक प्रशंसा के विकास हेतु निम्नलिखित मुख्य क्षेत्रों पर ध्यान देने की जरूरत है:

- **कला द्वारा सृजनात्मक तथा सौंदर्य प्रोत्साहन :** गतिविधियों जैसे ड्राइंग तथा रंग भरना, पेन्टिग करना, छपाई, फाड़ना, काटना और चिपकाना, कोलॉज बनाना, क्ले मॉडलिंग, पेपर फोल्डिंग आदि पाठ्यचर्या का हिस्सा हो सकती है।

- **सृजनात्मक गति :** बच्चो को क्रियाओं के साथ कविताएँ बोलना, लयात्मक गतिविधियाँ जैसे नृत्य करना, हाथों से ताली बजाना, अंगुलियों की थाप, पैरों की थाप और धुन पर ताली जैसी गतिविधियों में व्यस्त किया जा सकता है।
- **सृजनात्मक अभिनय :** हाथी चाल चलना, खरगोश की तरह उछलना जैसी गतिविधियों का कहानी एवं स्थिति को अपने संवाद तथा हाव-भाव से व्यक्त करना, डम्ब शेराज जैसे खेल सृजनात्मकता को बढ़ाने के लिए कराए जा सकते हैं।
- **सृजनात्मक चिन्तन :** मुक्त खेल, अभिनयकरण, स्वांग रचना, रचनात्मक खेलों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। मुक्त प्रश्न, कल्पना को उद्दीपित करते हैं तथा सृजनात्मकता को बढ़ावा देते हैं। कहानियों तथा कविताओं का निर्माण सृजनात्मकता को बढ़ाता है।
- **सौंदर्यात्मक प्रशंसा का विकास :** बच्चों में अपने आस-पास के परिवेश में सौंदर्य तथा रंगों के प्रति संवेदनशीलता का विकास आवश्यक है। साधारण गतिविधियाँ जैसे कक्षा को सजाना, कक्षा में बच्चों के आँखों के स्तर पर आकर्षक तथा महत्वपूर्ण ढंग से प्रदर्शन करना, जब भी संभव हो प्रदर्शन सामग्री को बदलना, प्रकृति भ्रमण तथा सैर, बच्चों का ध्यान प्राकृतिक सुंदरता की ओर खींचना, उन्हें सौंदर्य को अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना, उनके सौंदर्यबोध को विकसित करता है। संगीत एवं कला द्वारा सौंदर्यात्मक अनुभव प्रदान करने को दैनिक कार्यक्रम का सरलता से हिस्सा बनाया जा सकता है जैसे कि दिन की शुरुआत गाने, सामूहिक लयात्मक गतिविधियों तथा शारीरिक अभ्यास के साथ करना। प्रत्येक दिन में गानों के लिए समय होना जरूरी है जब बच्चे गाने एवं कविताओं को दोहरा सकें और आनन्द ले सकें।

पाठगत प्रश्न 13.3

निम्नलिखित के उत्तर दीजिए–

(क) ईसीसीई अवस्था में किन दो संज्ञानात्मक कौशलों पर ध्यान देने की जरूरत होती है?

(ख) किन्हीं तीन संख्या पूर्व अवधारणाओं की सूची बनाइए।

(ग) व्यक्तिगत, सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास की दो गतिविधियों की सूची बनाइए।

13.7 विकासात्मक बदलावों की पहचान और हस्तक्षेप

सभी बच्चे छूने, चलने, दौड़ने, कूदने और बात करने में समान होते हैं फिर भी उनकी वृद्धि भिन्न-भिन्न तरीकों से होती है। ये भिन्नताएँ क्या हैं? विकास की गतियों के अन्तरों पर, किस प्रकार बच्चों का अवलोकन किया जाना चाहिए तथा कब इन अन्तरों पर ध्यान देने की जरूरत

है, इस सब पर हम परिचर्चा करेंगे। हमने आयु से जुड़ी हुई गतिविधियों की उपयुक्तता के विषय में चर्चा की जो कि छोटे बच्चों को व्यस्त होने, अन्वेषण तथा आनन्द लेने के लिये प्रेरित करती है। यदि कुछ बच्चे गतिविधियों में शामिल होने में किसी तरह का प्रतिरोध दिखाते हैं तब एक वयस्क के रूप में आपको इस ध्यान देना चाहिए। यदि बच्चा दोबारा समूह से अलग व्यवहार प्रदर्शित करता है तब बच्चे पर ध्यान दिये जाने की जरूरत है।

यह स्वाभाविक है कि बच्चा अपने तात्कालिक परिवेश में लोगों, वस्तुओं यहाँ तक कि घटनाओं से भी अन्तर्क्रियात्मक सम्बन्ध रखे। यदि कोई बच्चा अपने परिवेश के प्रति उदासीनता दिखाता है तब बच्चे पर निगाह रखना उचित है। वास्तव में एक निश्चित आयु पर बच्चे समान व्यवहार करने, कुछ योग्यताओं को प्राप्त करने तथा छोटी-छोटी चुनौतियों का सामना करने का प्रयास करते हैं।

आयु से सम्बन्धित कौशलों और व्यवहारों का अर्जन विभिन्न आयामों में हुई प्रगति और अभिवृद्धि को दर्शाता है। यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि कोई दो बच्चे एक ही दर से नहीं बढ़ते तथा प्रत्येक बच्चे की अपनी विशिष्ट गति होती है।

एक ईसीसीई केन्द्र में प्रायः कुछ बच्चे अन्य बच्चों की तुलना में अधिक सक्रिय होते हैं जबकि कुछ शान्त, शर्मीले, संकोची या लगभग अलग रहने वाले हो सकते हैं। दोनों तरह के बच्चों पर ध्यान देने और हस्तक्षेप करने की जरूरत होगी यदि निरन्तर ऐसा होता है या फिर कुछ बच्चे नियमों का प्रतिरोध करते हैं। कुछ सामान्य बदलाव हो सकते हैं :

व्यवहार में परिवर्तन	आयाम	हस्तक्षेप की प्रकृति
विकास के महत्वपूर्ण पड़ावों को पार करने में देरी	शारीरिक और गत्यात्मक	पोषण, संवेदी उद्दीपन, गतिविधि
धक्का मारने या पीटने जैसे कार्य बार-बार करना	विभिन्न आयाम	व्यावसायिक सहायता हेतु बाल रोग विशेषज्ञ भेजना
शान्त तथा पृथक्	सामाजिक-संवेगात्मक	कला, अभिनय, गति एवं संवाद
उच्च स्तर की ऊर्जा	सामाजिक-संवेगात्मक या शारीरिक	बैठकर करने वाली धीमी गति की गतिविधियाँ जैसे रंगना
अन्य व्यक्तियों या बाह्य खेलों से प्रतिरोध	सामाजिक-संवेगात्मक या शारीरिक	कला, अभिव्यक्ति और संवाद को प्रोत्साहित करना
प्रायः प्रश्न पूछना	संज्ञानात्मक	अपनी बारी लेने के लिए प्रोत्साहित करना
कला, संख्या या संगीत जैसे किसी कौशल में दक्षता का प्रदर्शन	संज्ञानात्मक, भाषायी	प्रदर्शन की सुविधा तथा कौशल निर्माण के अवसर

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

इस पाठ में आपने सीखा–

- ईसीसीई को विकास के विभिन्न आयामों, प्रत्येक उप-अवस्था में बच्चों की विशेषताओं तथा उनके सीखने की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए समग्र तथा एकीकृत परिप्रेक्ष्य पर आधारित होना चाहिए।
- बच्चों में सीखने और अपने चारों ओर की दुनिया के अर्थ-निर्माण की स्वाभाविक इच्छा होती है। प्रारंभिक वर्षों में सीखना बच्चों की रुचियों और प्राथमिकताओं के अनुसार होना चाहिए। इसे औपचारिक रूप से संरचित होने के स्थान पर बच्चे के अनुभवों के सन्दर्भ में होना चाहिए। छोटे बच्चों को खेल और गतिविधि आधारित अनुभव प्रदान किये जाने चाहिए।
- अध्यापक को, एक उपयुक्त वातावरण जो कि उत्प्रेरक तथा अनुभवों से परिपूर्ण हो, बच्चों को खोज तथा अन्वेषण, प्रयोग करने तथा अपने को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने के अवसर और सौहार्द, सुरक्षा तथा भरोसे की भावना प्रदान करे, सुनिश्चित करना चाहिए।
- खेलना, गीत, कविताएँ, कला तथा स्थानीय सामग्री का प्रयोग करके अन्य गतिविधियों के साथ-साथ सुनने, बोलने तथा अपने को अभिव्यक्त करने के अवसर तथा अनौपचारिक अन्त:क्रिया, इस अवस्था में सीखने के आवश्यक तत्व हैं।
- प्री-स्कूल अवस्था में 3Rs (पढ़ना, लिखना और गणित) का औपचारिक शिक्षण नहीं होना चाहिए।
- प्रत्येक बच्चा अनोखा है तथा उसकी जरूरतें, अपेक्षाएँ, योग्यताएँ, रुचियाँ सभी अलग-अलग होती हैं। दिव्यांग बच्चों सहित सभी बच्चों के लिए समावेशी परिवेश की रचना करना महत्वपूर्ण है।

पाठान्त प्रश्न

1. ईसीसीई के संदर्भ में पाठ्यचर्या से आप क्या समझते हैं?
2. बाल विकास के सभी आयामों की सूची बनाइए।
3. बच्चे को संवेगात्मक रूप से विकसित करने तथा व्यवहार संबंधी दोषों से बचाने के लिए कुछ क्रियाकलाप सुझाइए।
4. छोटे बच्चों को प्रचुर सूक्ष्म गत्यात्मक तथा स्थूल गत्यात्मक गतिविधियाँ प्रदान करनी चाहिए, क्यों?

5. भाषायी विकास में किन क्षेत्रों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है?
6. छोटे बच्चों में सृजनात्मकता प्रोत्साहन के लिए कुछ गतिविधियाँ बताइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

13.1

1. (क) सत्य

   (ख) सत्य

   (ग) असत्य

   (घ) असत्य

2. यदि बच्चे सक्रिय हैं, प्रश्न पूछ रहे हैं, वस्तुओं के साथ खेल रहे हैं और उनकी खोज कर रहे हैं तो ये प्रगति के चिह्न हैं।

13.2

(क) बालकेन्द्रित

(ख) समावेशी

(ग) जिज्ञासा तथा अन्वेषण

(घ) खेल तथा गतिविधि-आधारित

13.3

(क) स्मृति तथा अवलोकन, वर्गीकरण, क्रमबद्ध चिन्तन, समस्या समाधान तथा तर्कशक्ति

(ख) बड़ा, छोटा, समान रूप से (आकार में), लम्बा, छोटा, समान रूप से (लम्बाई में), भारी, हल्का, समान रूप से (वजन में), ऊँचा, छोटा, समान रूप से (ऊँचाई में), मोटा/घना, पतला, समन रूप से (आकार में), चौड़ा, सँकरा, समान रूप से (चौथाई में), ज्यादा, कम, समान रूप से (द्रव्यमान/मात्रा की अवधारणा), दूर, पास, समान रूप से (दूरी में),।

(ग) व्यक्तिगत-सामाजिक विकास के लिए गतिविधियाँ दूसरों के साथ खेलना, दूसरों के साथ रहना, दूसरों की सहायता करना तथा सामाजिक होना, अच्छी आदतों का विकास, व्यक्तिगत स्वच्छता एवं साफ-सफाई बनाये रखना, उचित प्रकार से खाने की आदतों का विकास, सही से शौचालय का प्रयोग करना, खाना खाने के पहले व बाद में हाथों को धोना, खेलने के बाद वस्तुओं को अपनी जगह पर रखना, वातावरण को साफ रखना, सहयोग करना, दूसरों का आदर करना आदि हैं।

टिप्पणी

संदर्भ

- Kaul, et al, (1998). *Numeracy and Reading Readiness levels of Entrants to Class I.* New Delhi: NCERT.
- Kaul,V.(2010). *Early Childhood Education Programme.* New Delhi: NCERT.
- Ministry of Human Resource Development (1992). *Programme of Action.* New Delhi: Government of India.
- Ministry of Human Resource Development (1986). *The National Policy on Education, 1986.* New Delhi: Government of India.
- Ministry of Women and Child Development (MWCD). *National Early Childhood Care and Education (ECCE) Curriculum Framework.* New Delhi: Government of India.
- Ministry of Women and Child Development. (2013). *National Early Childhood Care and Education (ECCE) Policy.* New Delhi: Government of India.
- Ministry of Women and Child Development (2014). Quality Standards for Early Childhood Care and Education. New Delhi: Government of India.
- National Council of Educational Research and Training. (2006). *National Curriculum Framework, 2005.* New Delhi: NCERT.
- National Council of Educational Research and Training. (2006). *Position Paper of the National Focus Group on Early Childhood Education.* New Delhi: NCERT.
- Soni, R. (2005). *Little Steps.* New Delhi: NCERT.
- Soni, R. (2012). *Trainer's Handbook in Early Childhood Care and Education.* New Delhi: NCERT.
- Soni, R; et.al. (2008). *Early Childhood Education-An Introduction.* New Delhi: NCERT.